मार्च 2017

वर्ष 29 अष्टम् अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 साँच को आँच क्या ?

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान
16 आर्थिक परिदृश्य
21 आर्थिक समीक्षा 2016-17
27 केन्द्रीय बजट 2017-18
33 राष्ट्रीय परिदृश्य
36 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
42 क्रीड़ा जगत्
46 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
47 युवा प्रतिभाएं
49 विज्ञान समाचार
51 सारभूत तत्व कोष

लेख

55 समसामयिक लेख–दक्षिणी चीन सागर : विवाद का सागर
56 आर्थिक लेख– भारतीय कृषि व्यावसायीकरण में कार्बनिक खेती की भूमिका : वर्तमान दृष्टिकोण
58 जैव विविधता लेख–कृषि जैव विविधता संरक्षण एवं प्रबन्धन : 21वीं सदी की एक महती आवश्यकता
60 सामाजिक लेख–छत्तीसगढ़ में शिक्षा से सम्बन्धित प्रमुख जनकल्याणकारी योजनाएं
62 अन्तरिक्ष लेख–अद्भुत है पीएसएलवी सी-3 एवं स्कैट सेट-1 की समन्वित सफलता
63 तकनीकी लेख–राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
65 सामयिक लेख–स्वच्छ जल के घटते हुए स्रोत
66 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड, सहायक स्टेशन मास्टर परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न-मनोवैज्ञानिक एवं अभिरुचि परीक्षण

हल प्रश्न-पत्र

69 रेलवे भर्ती बोर्ड (एन.टी.पी.सी.) परीक्षा, 2016
77 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय (चरण-I) परीक्षा, 2016
85 बिहार बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2016
93 कर्मचारी राज्य बीमा निगम मल्टी टॉस्किंग स्टाफ भर्ती परीक्षा, 2016
108 केन्द्रीय शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2016 (द्वितीय प्रश्न-पत्र)
121 दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन जूनियर इंजीनियर (इलेक्ट्रॉनिक्स) परीक्षा, 2016
125 विविध तथ्य–परमाणु ऊर्जा विभाग की प्रमुख उपलब्धियाँ–2016
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

All men's souls are immortal, but the souls of the righteous are immortal and divine.

— Socrates

जिस तरह सच्चे सोने को आग में पिघलाने से उसकी प्रमाणिकता कम नहीं हो जाती, बल्कि और अधिक बढ़ जाती है. सच्चे सोने को किसी भी जौहरी से कोई भय नहीं रहता, उसी प्रकार सच्चाई को किसी सबूत की आवश्यकता नहीं होती. वह तो स्व-प्रमाणित होती है. वक्त के साथ खुद-ब-खुद सबके सामने आ ही जाती है.

दुनिया में लोग अनेक कारणों का बहाना लेकर झूठ बोलने का फैसला करते हैं. वे शायद झूठ के परिणामों को नहीं जानते. एक झूठ अनेक झूठ की शृंखला को तो पैदा करता ही है, साथ ही इंसान के आन्तरिक व्यक्तित्व को भी खण्डित कर देता है. उसकी चित्त शान्ति को समाप्त कर देता है. झूठ बोलने वाले को मानसिक शक्तियों का बहुत अपव्यय करना पड़ता है, उसे बहुत सारी मनगढ़ंत योजनाएं बुननी पड़ती हैं, झूठ बोलने के बाद उसे याद भी रखना पड़ता है कि उसने किसको क्या कहा ? किन्तु सत्यवादी को न पहले सोचना पड़ता है न बाद में पछताना पड़ता है. सत्य को सोचना नहीं पड़ता इसीलिए वह हमारा धर्म है, स्वभाव है वह जीया जा सकता है. सत्य जीता है, जबकि झूठ, जो प्रतिपल बनाए जाने पर बनता है वह मिटता है. बनना-मिटना, जुड़ना-बिखरना. ये सब झूठ में ही सम्भव है, सत्य न बनेगा न टूटेगा. इसीलिए कहा जाता है कि साँच को आँच नहीं. साथ ही यह भी कहा जाता है कि—

''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।''

झूठ पाप है, क्योंकि वह अपने आप में ही एक षड्यन्त्र रचता है. झूठ बोलना या झूठ सोचना दोनों ही पाप हैं. कई लोग मन ही मन 100 झूठ गढ़ते हैं, किन्तु बोलते तो एक या दो ही हैं, कदाचित् बोलने का मौका न जाए, तो बोलते भी नहीं हैं, किन्तु झूठ को सोचते रहने से वे खुद को धोखा दिए चले जाते हैं. वे, जो दूसरों की आँखों में धूल झोंकने की सोचते हैं वस्तुतः वे स्वयं की ही आँखों में धूल झोंक रहे होते हैं.

●●●